International Journal of Sanskrit Research 2024; 10(3): 140-141

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2024; 10(3): 140-141
© 2024 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 02-03-2024
Accepted: 05-04-2024

डॉ. रेखा अरोड़ा
एसोसिएट प्रोफेसर,
मिरांडा हाउस, दिल्ली विश्वविद्यालय,
नई दिल्ली, भारत

Corresponding Author:
डॉ. रेखा अरोड़ा
एसोसिएट प्रोफेसर,
मिरांडा हाउस, दिल्ली विश्वविद्यालय,
नई दिल्ली, भारत

'किरातार्जुनीयम्' का प्रथम सर्ग और राजनीति

डॉ. रेखा अरोड़ा

सारांश
राजनीति के परम ज्ञाता महाकवि भारवि ने अपने प्रौढ़ पाण्डित्य को महाकाव्य 'किरातार्जुनीयम्' में पिरो दिया है। राजा का आचरण, साम, दान, दण्ड, भेद इन चार उपायों का प्रयोग, राजनीति के षड्गुण, आश्रितों के प्रति उसका व्यवहार, राजा की नीतियाँ, मन्त्रशक्ति की गोपनीयता, गुप्तचर व्यवस्था, क्षत्रिय धर्म इन अनेक विषयों का उन्होंने दुर्योधन और युधिष्ठिर के माध्यम से विश्लेषण किया है। किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग में हमें राजनीति विषयक सारगर्भित चिन्तन उपलब्ध होता है जो उनकी शैली की अर्थगम्भीरता के साथ–साथ उनके राजनैतिक नैपुण्यता को भी प्रदर्शित करता है।

कूटशब्दः राजनीति, महाकवि भारवि, किरातार्जुनीयम, दान, दण्ड, भेद

प्रस्तावना
महाकवि भारवि की कीर्तिकौमुदी का आधार उनका सुप्रसिद्ध महाकाव्य किरातार्जुनीयम् है। बृहत्त्रयी में परिगणित इस महाकाव्य का प्रथम सर्ग राजनैतिक दृष्टि से विशेष महत्त्वपूर्ण है। इसमें राजनीति के विविध सिद्धान्तों का विश्लेषण यत्र–तत्र–सर्वत्र दृष्टिगत होता है। द्वैतवन में युधिष्ठिर अपने अनुजों सहित वनवास की अवधि व्यतीत कर रहे थे। दुर्योधन की राजनीति और उसके प्रजा के प्रति व्यवहार को जानने हेतु उन्होंने एक गुप्तचर को ब्रह्मचारी के वेश में दुर्योधन के राज्य में भेजा। वह किरात समस्त समाचार एकत्रित कर युधिष्ठिर के पास आता है और उन्हें निवेदन करता है। इसी प्रसंग में कूटनीति के अनेक गूढ़ सिद्धांत सामने आते हैं जिनका विश्लेषण इस प्रकार है –
'किरातार्जुनीयम्' में सर्वप्रथम हमें गुप्तचरों का वर्णन प्राप्त होता है। 'चारचक्षुषः राजानः'[1] अर्थात् राजा लोग गुप्तचर रूपी नेत्रों से देखते हैं – यह कहकर भारवि ने राजाओं के लिए गुप्तचरों के महत्त्व को रेखांकित किया है। राजा केन्द्र में स्थित होकर सम्पूर्ण राज्य को एक साथ नहीं देख सकता अतः उसके द्वारा नियुक्त किए गए गुप्तचर उसे देश–विदेश की सूचनाओं से अवगत कराते हैं। राजा को अपने और शत्रु राज्य के समस्त क्रियाकलापों और सूचनाओं का ज्ञान गुप्तचरों से ही मिलता है। गुप्तचरों द्वारा प्राप्त इन समाचारों पर ही उसकी अग्रिम नीतियाँ निर्धारित होती हैं। अतः भारवि का कथन है कि वे सदा यथार्थ स्थिति का परिचय राजा को दें।[2] भले ही वह समाचार राजा को प्रीतिकर हो या न हो क्योंकि 'अप्रियस्य च पथ्यस्य च वक्ता श्रोता च दुर्लभः'।[3]
चाटुकार सेवक तो सदा स्वामी को मधुर–मधुर बातें कहकर प्रसन्न करने में लगे रहते हैं भले ही उससे स्वामी का अहित क्यों न हो जाए लेकिन एक हितैषी सेवक वही है जो स्वामी को सभी समाचार तथ्य रूप में कहता है। 'न हि प्रियं प्रवक्तुमिच्छन्ति मृषा हितैषिणः'[4] जो गुप्तचर राजा को उचित बात नहीं बताता वह कुत्सित मित्र हैं और जो हितकारी व्यक्ति की बात नहीं सुनता वह निकृष्ट राजा है। जब राजा और मंत्री परस्पर सहयोगी रहते हुए विविध कार्य करते हैं, तभी सारी संपत्तियाँ उनसे स्नेह करती है[5], उनकी राज्यलक्ष्मी स्थायी हो जाती हैं।
राजनीति का सामान्य नियम है कि गुप्तचर इस रूप में अन्य राज्यों में भेजे जाएँ कि वे पहचाने न जा सकें। भारवि ने भी एक वनेचर को गुप्तचर बनाकर ब्रह्मचारी के वेश में दुर्योधन के राज्य में भेजा –

स वर्णिलिंगी विदितः समाययौ युधिष्ठिरं द्वैतवने वनेचरः।।[6]

विनम्रता उनका विशेष गुण है। युधिष्ठिर द्वारा नियुक्त गुप्तचर समस्त समाचार वर्णन से पूर्व अपने कार्य की पूर्णता का श्रेय युधिष्ठिर को ही देता है।
किसी भी राजा को सफल होने के लिए 'अरिषड्वर्ग' पर विजय प्राप्त करना अनिवार्य है –

कामः क्रोधस्तथालोभो हर्षो मानो मदस्तथा।
षड्वर्गमुत्सृजेदेनमस्मिन्त्यक्ते सुखी नृपः।।[7]

काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मात्सर्य ये छह ही अरिषड्वर्ग के अन्तर्गत आते हैं, इन्हें मानव का आंतरिक शत्रु कहा जाता है। अपने भीतरी शत्रुओं को जीत कर ही राजा बाह्य शत्रुओं का विनाश कर सकता है। एक सामान्य व्यक्ति भी अपने दुर्गुणों पर विजय प्राप्त किए बिना जीवन में सफल नहीं हो सकता तो सम्पूर्ण राज्य का उत्तरदायित्व जिस पर है, ऐसे राजा के लिए तो इन पर नियंत्रण पाना अत्यंत अनिवार्य है। दुर्योधन काम–क्रोधादि षड्रिपुओं पर विजय प्राप्त करके मनु द्वारा निर्दिष्ट प्रजापालन पद्धति को प्राप्त करना चाहता है।
भारवि दुर्योधन के माध्यम से राजा के लिए समय प्रबंधन की आवश्यकता पर बल देते हैं। करणीय कार्यों का समयानुकूल विभाजन करने से कार्य सरलता से पूर्ण हो जाते हैं। समय पर कार्य पूर्ति होना एक विशिष्ट उपलब्धि है। इससे मानव के उत्साह और आत्मविश्वास में वृद्धि होती है। अतः एक श्रेष्ठ राजा को समय के सम्यक् विभाजन पर अपना ध्यान केन्द्रित करना चाहिए यथा किरातार्जुनीयम् में कहा गया है कि दुर्योधन कार्यों को रात–दिन में विभाजित करके, आलस्य रहित होकर प्रजा का पालन कर रहा है और अपने पौरुष का विस्तार कर रहा है –

विभज्य नक्तन्दिवमस्ततन्द्रिणा वितन्यते तेन नयेन पौरुषम्।[8]

साम, दान, दण्ड, भेद ये चार उपाय और सन्धि, विग्रह, यान, आसन, संश्रय द्वैधीभाव इन षड्गुणों[9] के सम्यक् प्रयोग से राजा लक्ष्यों की सिद्धि कर सकता है धर्म, अर्थ, काम इन तीनों में संतुलन बनाते हुए इनका सेवन करना चाहिए। केवल मात्र अर्थ और काम के प्रति आसक्ति नहीं होनी चाहिए। धन व स्वामित्व की प्रभुता से इन दो पुरुषार्थों की सिद्धि सरलतापूर्वक संभव है लेकिन श्रेष्ठ राजा वही है जो त्रिवर्ग को समान पक्षपातपूर्वक अपनाता है।
भारवि के मत में राजा के लिए अपने मन्तव्यों और योजनाओं को गूढ़ रखना अत्यावश्यक है। श्रेष्ठ राजा अपनी नीतियों को सदा गुप्त रखता है। जब तक कार्य पूर्ण न हो जाए तब तक उसकी नीतियों का किसी को पता नहीं लगना चाहिए। आदर्श राजा वही है जिसके कार्यों की पूर्णता पर ही उनके आरंभ का पता चले[10] लेकिन इसके साथ ही राजा का यह कर्तव्य है कि वह शत्रुपक्ष और मित्रपक्ष की समस्त गतिविधियों से निरंतर अवगत रहे। इस प्रकार से राज्य की सुरक्षा व्यवस्था सुदृढ़ बनी रहती है।
संपूर्ण साम्राज्य के अधिपति और रक्षक राजा की अपनी सुरक्षा व्यवस्था भी सुदृढ़ होनी चाहिए।[11] भारवि कहते हैं कि दुर्योधन ने अपनी सुरक्षा हेतु चारों ओर अपने आत्मीय जनों को ही रक्षक नियुक्त किया हुआ है –

विधाय रक्षान्परितः परेतरानशङ्किताकारमुपैति शंकितः।[12]

द्रौपदी के मुख से कवि ने मानव जीवन में कूटनीति के इस शाश्वत सत्य से परिचित करवाया है कि जो मनुष्य कपटियों के साथ कपट नहीं करते, वे मूढ़बुद्धि सदा पराजय को प्राप्त होते हैं। नीच जन ऐसे लोगों को तीक्ष्ण बाणों के समान प्रवेश करके मार डालते हैं –

व्रजन्ति ते मूढ़धियः पराभवं भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः।[13]

राजनीति में क्रोध भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण है जिसका क्रोध अमोघ होता है, उससे सभी डरते हैं व उसके वशीभूत हो जाते हैं परन्तु क्रोधहीन व्यक्ति से मित्रता होने पर लोगों का न तो उसके प्रति सम्मान होता है और न ही उसकी शत्रुता से भय। लेकिन इसका अभिप्राय यह नहीं कि व्यक्ति को क्रोध के वशीभूत होकर आवेश में एकाएक कोई कार्य करना चाहिए अपितु सदा सोच–समझकर ही काम करना चाहिए –

सहसा विदधीत न क्रियामविवेकः परमापदां पदम्।[14]

अन्यथा पश्चाताप के अतिरिक्त कुछ शेष नहीं रहता।
दुर्योधन की उन्नति का समाचार सुन विह्वल हुई द्रौपदी के शब्दों में शान्ति राजाओं का धर्म नहीं। निष्काम मुनिजन ही शान्ति से कार्य सिद्धि करते हैं, क्षत्रिय नहीं अतः राजा को शत्रुओं के विनाश के लिए क्षात्र तेज को धारण करना ही चाहिए –

विहाय शान्तिं नृप धाम तत्पुनः प्रसीद सन्धेहि वधाय विद्विषाम्।[15]

इस प्रकार 'किरातार्जुनीयम्' महाकवि भारवि के राजनीतिविषयक प्रकाण्ड ज्ञान को दर्शाता है। चूंकि भारवि स्वयं राजा के (चालुक्यवंशी विष्णुशर्मन) सभापण्डित थे, अतः राजनीति के सूक्ष्मातिसूक्ष्म तत्त्वों का उन्हें विशद ज्ञान था।

संदर्भ सूची

1. किरातार्जुनीयम्–1.4
2. क्रियासुयुक्तैर्नृप चारचक्षुषो न वञ्चनीयाः प्रभवोऽनुजीविभिः।
   अतोऽर्हसि क्षन्तुमसाधु साधु वा हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः।।
   किरातार्जुनीयम्–1.4
3. रामायणम्–10.16
4. किरात.–1.2
5. सदानुकूलेषु हि कुर्वते रतिं नृपेष्वमात्येषु च सर्वसम्पदः।।
   किरात.–1.5
6. किरात.–1.1
7. कामन्दकनीतिसार–1.55
8. किरात.–1.9
9. सन्धिविग्रहयानानि संस्थाप्यासनमेव च।
   द्वैधीभावञ्च विज्ञेयाः षड्गुणा नीतिवेदिनाम्।। कामन्दकनीतिसार
10. तस्य संवृतमंत्रस्य गूढाकारेंगितस्य च।
    फलानुमेयाः प्रारम्भाः संस्काराः प्राक्तना इव।। रघुवंशम्–1.20
11. लोकानुग्रहमन्विच्छन् शरीरमनुपालयेत्। कामन्दकनीतिसार–6.4
12. किरात.–1.4
13. किरात.–1.30
14. किरात.–2.30
15. किरात.–1.42